

2. ग्राम्, ग्राम्स्ते (ved. und ep. auch ग्राम्स्ते, ep. auch act.), ग्राम्स्ते, 3. pl. ep. ग्राम्स्ते; 2. du. potent. ep. ग्राम्स्तेताम् (I R. 1, 72, 15); imperat. ग्राम्स्व, ग्राम्स्व und ep. ग्राम्स्व (MBh. 3, 10036), ग्राम्धम्; aor. 3. pl. ग्राम्सिपत; ग्राम्सिप्यते; ग्राम्सां चक्रे (P. 3, 1, 87. Vop. 8, 55. 9, 39); partic. praes. ग्राम्सां (ved.), ग्राम्सीन (ved. und klass. P. 7, 2, 83. Vop. 26, 138) und ग्राम्सात् (R. 2, 97, 3. 4, 10, 7); ग्राम्सितुम्, ग्राम्सिवा, ग्राम्सित 1. 1) sitzen, sich setzen Dhātup. 24, 11. य ग्राम्स्ते यश्च चरति RV. 7, 53, 6. सुते सचा मधो न मत्तु ग्राम्स्ते 32, 2. ययो यमस्य सार्द्धं ग्राम्सति विद्या वदन् AV. 18, 3, 70. 10, 10, 12. अत्तर्व्यासां चक्रिरे, इमे मे ऽत्तर्वेदि मासिपत Ait. Br. 7, 27. ग्राम्स्ते वा शेते वा Çat. Br. 2, 3, 2, 4. मुहूर्त्तं सभायामासिवा 5. 9, 1, 2, 14. 4, 6, 6, 1—5. ग्राम्स्व Bṛh. Âr. Up. 2, 4, 4. नामीत M. 2, 203. गोऽश्वोऽष्ट्रयानप्रासादप्रस्तरेषु केषु च । ग्राम्सीत गुरुणा सार्धं शिलाफलकनौषु च ॥ 204. कौश्यां वृष्यामासस्व ययोपज्ञोपम् MBh. 3, 10036. ग्राम्सीने भवान्स्ताम् R. 1, 30, 10. Çik. 101, 10. ग्राम्सिप्ये R. 2, 30, 14. ग्राम्सितुम् 3, 49, 9. ग्राम्सीन H. 492. M. 1, 1, 2, 195. 196. 3, 3, 189. 219. 4, 43. 6, 49. 7, 91. 8, 2, 10. 11, 111. MBh. 1, 2215. 3287. Sund. 3, 3. R. 1, 4, 13. 31, 31. Hit. 29, 12. pass. impers.: ग्राम्स्यामिति चोक्तः सन्नासीताभिमुखं गुणैः M. 2, 193. N. 12, 49. mit dem acc. statt des gebräuchlicheren loc.: एतदासनमास्यताम् Vikr. 27, 16. तस्य — पूर्वं समुद्रतटमासतः R. 4, 10, 7. स्नान्यासनमुख्यानि ग्राम्स्तेतां मुनिपुंगवा (vielleicht zu lesen: ग्राम्स्यातां मुनिपुंगवैः) 1, 72, 15. von Thieren und todten Körpern: ruhen, liegen Megh. 33. विद्याधरारोराणि तत्र क्स्माकमासते Kathās. 26, 265. — 2) sich aufhalten, wohnen, seinen Wohnsitz aufschlagen: द्विवि देवास ग्राम्स्ते RV. 1, 20, 6. 9, 15, 2. यत्रासते सुकृता यत्र ते युयुः 10, 17, 4. 2, 41, 5. 10, 107, 10. स्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराधम् VS. 17, 75. कस्मिंस्ते लोक ग्राम्स्ते AV. 11, 8, 10, 32. 4, 34, 4. 18, 2, 48. अयं ग्रामो यस्मिन्नास्ते Khand. Up. 4, 2, 4. यावद्गामाणि भवन्ति तस्यास्तावद्वर्षायामासते देवलोकै MBh. 3, 12723. एवं सर्वमहं कालमिह्मास्ते (!) 12991. तत्र (ग्राम्श्रे) कश्चिदृषिरासां चक्रे 1, 674. 2, 104. 5, 256. इह्कामि नित्यमेवाहं त्वया पुत्र सहासितुम् 3, 14465. Kathās. 25, 68. Vid. 290. Brahma-P. 52, 2. Bhāṭṭ. 4, 6, 8, 79. लोकानुपर्युपर्यास्ते माधवः Vop. 3, 7. कुत्रनास्ते er wohnt bei den Kuru P. 1, 4, 51. Vārtt. 2, Sch. दूरत ग्राम् in der Entfernung weilen, entfernt sein Kāt. 1. von Unpersönlichem: vorhanden sein: (यत्र) मुदः प्रमुद ग्राम्स्ते RV. 9, 113, 11. ग्राम्सांनेभिर्मियैः 6, 31, 12. ग्राम्सीनामूर्ध्नुप ये सर्चते AV. 18, 4, 40. — 3) sitzen bleiben, stillsitzen, verweilen, verbleiben, aushalten, verharren; sowohl mit dem Begriff der Unthätigkeit als mit dem der Ausdauer oder der ruhigen Würde: वयो न किंचिदपि पतिवांसं ग्राम्स्ते व्युष्टौ RV. 1, 48, 6. 2, 43, 3. व्योक्तिपतृषीस्ताम् AV. 1, 14, 1. ग्राम्स्ते भग ग्राम्सीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः Ait. Br. 7, 15. Çat. Br. 9, 3, 4, 15. मुहूर्त्तं तावदास्यताम् man verweile nur einen Augenblick R. 3, 9, 32. Brahma-P. 56, 8. इहैवास्ते तु सा (दक्षिणा) लोके गौरन्धेवैकवेष्मानि M. 3, 114. von Jmd der Audienz giebt: जनको ह वैदेह ग्राम्सां चक्रे Çat. Br. 14, 6, 10, 1 = Bṛh. Âr. Up. 4, 1, 1. im Feldzuge: sich niederlassen, ein Lager beziehen (Gegens. या): यदा तु स्यात्परितीपो वाक्नेन वलेन च । तदासीत प्रयत्नेन शनैः शास्त्रयन्त्रोन् ॥ M. 7, 172. von denen, welche am Altar opfernd oder stehend verharren (vgl. सद, sedere, καθίζω u. s. w.); feiern: (यज्ञे) यं तं ग्राम्सांनु कुरुते क्विष्मान् RV. 6, 10, 6. 47, 9. समोचिनासं ग्राम्स्ते होतारः 9, 10, 7. Çat. Br. 4, 6, 4, 4. 8, 19. 14, 1, 4, 3. die, eine längere Zeit föllende Ceremonie steht dabei im acc.: एकादशरात्रमासते TS. 7, 2, 8, 2.

bes. häufig सत्रम् sessionem (sacrificam) sedere TS. 7, 1, 4, 1. Ait. Br. 2, 19. ये दीर्घसत्रमासीरन् Çat. Br. 4, 5, 4, 12. 9, 1, 5, 5, 5, 13. 11, 5, 5, 1. कृत्वा मूत्रमुपस्पृश्य संध्यां सो ऽस्ते (für स ग्राम्स्ते) स्म (verrichtete er seine Andacht) नैषधः । अकृत्वा पादयोः शौचं तत्रैवं कलिराविशत् ॥ N. 7, 3. — 4) einer Handlung fortwährend obliegen, in einem Zustande oder Verhältnisse verharren, sich längere Zeit hindurch darin befinden, anhalten, dauern; die Ergänzung ist mannigf. Art: a) ein mit dem praed. congruierendes partic., adj. oder subst.: स्तस्य योनिं विमूषत्तं ग्राम्स्ते RV. 10, 63, 7. 71, 11. 2, 13, 4. विदेवं दीव्यमाना ज्ञात्या ग्राम्स्ते Çat. Br. 1, 8, 3, 6. एतत्साम गायत्रास्ते Taitt. Up. 3, 10, 5. Bhāg. 3, 6. प्रत्यहं वल्मीकिशिखराणि शृङ्गाभ्यां विदारयन्गर्मान् ग्राम्स्ते Pañkāt. 9, 8. 31, 4. Hit. 47, 14. 67, 18. प्रुका ऽपि मम पश्चादागच्छन्नास्ते 87, 15. 129, 15. वयमप्यागच्छन्त एवास्महे Dhāt. 81, 6. स्वाकारं निगूहन्सदेवास्ते Pañkāt. 36, 20. आगत्य च यावत्पश्यति तावन्नदीतिरे मकान्मत्स्यः सलिलान्निष्क्रम्य बहिःस्थित ग्राम्स्ते (seit längerer Zeit) 226, 22. तस्य — काष्ठे मकृता घाटा प्रवहन्तास्ते 89, 10. पुस्तकानो च लेखनाय लेखकानां वित्तं प्रदत्तास्ते (ist schon lange in ihren Händen) 237, 1. दुर्गं तावदिदमेव चिरात्सुनिद्रपितमास्ते मकृत्सरः Hit. 91, 1. संयत्नितो ऽयमास्ते रथः Çik. 100, 21, v. 1. Vet. 4, 11. Rāga-Tar. 5, 99. 480. ग्राम्सीता मरणात्ताता नियता ब्रह्मचारिणी M. 3, 158. मासमासीत भैक्षुम् 11, 255. ग्राम्स्ते वत्प्रतीक्षिणी N. 17, 37. Bhāg. 2, 61. वत्कृते बन्धुवर्गा गतसत्त्वा इवास्ते N. 16, 26. तस्य तपस्यभिरतः पुत्र ग्राम्स्ते MBh. 1, 674. आयुष्मान्नास्तामयम् Vikr. 86, 14. ग्राम्साताम् (!) — ग्राम्सादाने परिचूढा भृत्यावासापरिग्रहे sie waren stets Herren, wenn es galt einen Befehl zu ertheilen; Diener dagegen, wenn es galt einen Befehl zu empfangen, Rāga-Tar. 5, 3. — b) ein gerund. auf ता (य) oder ग्रम्: उपरुध्यारिमासीत er halte den Feind eingeschlossen M. 7, 195. ततो राजा यावदुत्तीर्णस्तावच्छत्रं तत्रावलम्ब्यास्ते hängt der Leichnam schon da Vet. 5, 11. तूष्णींभूय भयादासां चक्रिरे मृगयन्तिणः verhielten sich aus Furcht ganz still Bhāṭṭ. 5, 95. गेदिकृमास्ते er ist mit dem Melken der Kühe beschäftigt P. 1, 4, 51, Vārtt. 1, Sch. प्रायमास्महे wir sterben (s. इ mit प्र) langsam dahin, wir geben uns dem Hungertode hin R. 4, 37, 23. प्रायमासीनान् 3. कस्माद्वा प्रायमास्यते 56, 24. Vgl. auch u. उप und प्रायमुपविष्टान् R. 4, 56, 20. Hieraus ergibt sich, dass प्रायमाशिष्ये, ग्राम्शितुम् und उपाशिष्ये (s. 1. अग्र् mit ग्राम् und उप) nur falsche Schreibart ist. Ueber die Verwechslung von ग्राम् und अग्र् s. noch u. 6. Da ग्राम् sich auch sonst mit einem acc. verbindet (vgl. unten beim partic. ग्राम्सित das erste Beispiel u. c), so können दोहम् und प्रायम् auch als wirkliche acc. aufgefasst werden. — c) ein adv.: पृथिवीं लाङ्गलेनेह भित्वा वीर्यं वपत्युत । ग्राम्स्ते ऽयं कर्षकस्तूष्णीं (er verhält sich ganz ruhig) पर्यन्त्यस्तत्र कारणात् ॥ MBh. 3, 1248. Pañkāt. 21, 10. तूष्णीमास्यतान् Hit. 37, 17. सुखमास्व (gehabe dich wohl) रमस्व च R. 2, 16, 19. सुखमास्तो भवान् Vikr. 65, 17. सुखमास्यते वैः wer befindet sich wohl? Bhāṭṭ. 2, 49. किमिति त्राणमास्यते Çik. 66, 16. एवमास्ते (in diesen Verhältnissen befindet sich) मक्ताभागा सीता R. 5, 37, 15. Hierher ist wohl auch zu ziehen: स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रतेत किम् Bhāg. 2, 54; vgl. 61 und 64. — d) ein instr.: हिरण्यका ऽपि सकृन्मुखविलडुर्गं प्रविष्टः सन्नकुलोभयः सुखिनास्ते befindet sich ganz wohl Pañkāt. 107, 2. यस्मिन्कृत्यं समाविश्य निर्विशङ्केन चेतसा । ग्राम्स्याते bei dem man sich ruhiges Herzens fühlt, wenn man ihm